IOSR Journal Of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 24, Issue 12, Series. 1 (December. 2019) 81-83
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

शिक्षा और व्यक्तित्व विकास

डॉ0 प्रभा वार्ष्णेय
एसोसिएट प्रोफेसर, (संगीत विभाग)
श्री टीकाराम कन्या महाविद्यालय,
अलीगढ़

कौन सी शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली, टी0वी0 पत्रों आदि से प्राप्त होने वाली अथवा स्कूली शिक्षा। प्रत्येक शिक्ष विकासोन्मुख होती है। उससे विकास होगा ही, चाहे उसकी दिशा कोई भी हो। व्यक्तित्व– किसका–समाज का, राष्ट्र का अथवा व्यक्ति का। यहाँ हम स्कूली शिक्षा तथा मनुष्य के व्यक्तित्व–विकास तक ही सीमित रहेंगे। विद्यालीय शिक्षा क्या है? शिक्षा सविचार प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन, परिवर्धन और परिमार्जन होता है – अपने तथा समाज के उन्नयन के लिए। शिक्षा क्रिया नहीं, प्रक्रिया है। क्रिया में यांत्रिकता होती है। उसे कहते समय उसके विषय में सोचते नहीं, कि हम क्या कर रहे हैं। जैसे हम साईकिल चलाते हैं तो चलाते ही जाते हैं, सोचते नहीं कि कैसे चलायें। परन्तु जब प्रथम बार हमने साईकिल चलाना सीखा होगा, तो हमारे भाई–दोस्त अथवा पिता कहते थे, आगे सामने देखो, परन्तु हम पेडिल की ओर देखते थे, और सोचते थे कि कहीं गिर न जायें, अर्थात हम तन–मन से सजग थे कि हम साइकिल चलाना सीख रहे हैं कभी–कभी स्पप्न में भी फर्राटे से साईकिल चलाते थे। परंतु जब चलाने में दक्ष हो जाते हैं तो वह मानसिक सजगता समाप्त होकर यांत्रिकता आ जाती है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही सजग रहते हैं। शिक्षक को सोचना पड़ता है कि उसे क्या पढ़ाना है, क्यों पढ़ाना है, कैसे पढ़ाना हैं। वह बच्चे को राम बनाना चाहता है या रावण, कृष्ण बनाना चाहता है या कंस। विद्यार्थी सजग है कि उसे क्या पढ़ना है, क्यों पढ़ना है चाहे परीक्षा की दृष्टि से ही सही। एक मनौवैज्ञानिक ने गर्वपूर्वक कहा था – मुझे कोई से बारह बच्चे दे दो मैं एक को डॉक्टर, दूसरे को इंजीनियर, शिक्षक नेता, अभिनेता, डाकू जो चाहूँ बना सकता हूँ। उसने ऐसा कभी किया नहीं – परन्तु उसे

विश्वास था कि शिक्षा निर्माण ही नहीं विध्वंश भी कर सकती है। अतः शिक्षा सविचार प्रक्रिया है, सोच समझकर की जाने वाली प्रक्रिया इसमें शिक्षक, शिक्षार्थी दोनों ही सजग, सक्रिय तथा समर्पित होते हैं।

शिक्षा के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन त्रिपक्षीय होता है–मानसिक (बौद्धिक), संवेगात्मक तथा क्रियात्मक। इस त्रिपक्षीय परिवर्तन से व्यक्ति विशेष को ही लाभ नहीं होता अपितु समाज का भी उन्नयन होता है। अन्डरवर्ल्ड के दादा जो बच्चों को जेब–कट की ट्रेनिंग देते हैं उससे भी उनमें यह परिवर्तन होते हैं। परन्तु वह शिक्षा न होकर कुशिक्षा है क्योंकि उससे बच्चे बुरे कामो से अपने दादा और अपना कुछ लाभ तो करते हैं परन्तु समाज को उससे हानि ही होती है। अतः हम शिक्षा को वांछित व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया कह सकते हैं।

व्यक्तित्व (Personality) शब्द का उद्‌गम लेटिन भाषा के PERSONA शब्द से है जिसका अर्थ होता है Mask मुखौटा। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति रामलीला में हनुमान का मुखौटा लगाकर हनुमान बन जाता है। ठीक उसी प्रकार Personality शब्द की उत्पत्ति में छिपी है ऊपर की वेशभूषा न कि आंतरिक तत्व। अनेक मनौवैज्ञानिक ने व्यक्तित्व की अनेक परिभाषायें दी हैं। इनमें Allport की परिभाषा जो उसने अपनी कि पुस्तक A Personality-A Psychological Interpretation में 1939 में दी।

Personality is the dynamic organization within the individual of those psycho physical systems that determine his unique adjustments to his environment.

इसमें Adjustment शब्द की आलोचना हुई क्योंकि वातावरण में समायोजन तो प्रत्येक जीवधारी करता है। अनेक कीट–पतंगों के रंग पत्तों जैसे ही होते हैं फिर मानव के व्यक्तित्व की क्या विशेषता हुई। अतः 1961 में Allport ने अपनी पुस्तक,, Pettern And Growth in Personality" में Unique adjustments to his environment के स्थान पर २ Characteristic behavior and though " का प्रयोग किया।

व्यक्तित्व में मनो–शारीरिक दोनों प्रकार के व्यवहार आते हैं। इसे Dynamic भी कहा गया है अर्थात यह परिवर्तनशील हैं। इसमे ं स्थायित्व का अभाव है। उदाहरणार्थ

एक युवक कमरे में अकेला है, शीशे के सामने खड़ा होकर अपने बालों में कंघी कर रहा है।, वह कभी इधर कभी उधर बाल काड़ कर–मुस्कुराकर चेहरे को देखता है, अचानक उसके पिताश्री आ जाते हैं–उसमें अकस्मिक परिवर्तन आ जाता है। एक अन्य उदाहरण–एक विद्यार्थी बाजार में साथियों के साथ हंसी–मजाक करता हुआ मस्ती में सिगरेट पीता चला जा रहा है, अचानक सामने से उसके गुरूजी प्रकट होते हैं, उसके हाथ से सिगरेट छूट जाती है। उसके व्यक्तित्व में क्षण मात्र में परिवर्तन आ जाता है। इसीलिए कुछ मनौवैज्ञानिक व्यक्तित्व को Life Space या Life Style कहते हैं। अतः प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व समय–स्थान तथा मन स्थिति के अनुसार परिवर्तनशील है। परंतु प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व होता अद्वितीय है। क्योंकि संसार में ताजमहल भी इतना अद्वितीय नहीं है। जितने आप स्वयं। विश्व के 6 अरब से अधिक व्यक्तियों में आप के समान अन्य कोई नहीं है। इस बात को हम इस प्रकार भी स्पष्ट कर सकते हैं कि हम अनेक बातों अनेक लोगों के समान हैं, कुछ बातों से में कुछ लोगों के समान हैं परन्तु कुछ बातों में किसी के समान नहीं हैं। यही तो हमारा व्यक्तित्व है। यदि किसी समूह के समस्त व्यक्ति एक सी क्रियायें करते, एक या सोचते तथा एक सा ही महसूस करते तो व्यक्तित्व का अस्तित्व ही नहीं होता। अतः व्यक्तित्व किसी भी मनुष्य का ऐसा ढंग से काम करने, सोचने और महसूस करने का अन्दाज है तो उसको दूसरे लोगों से अलग करता है और एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान करता है। यदि बात और अधिक स्पष्ट की जाए तो – किसी मनुष्य के व्यक्तित्व में सम्मिलित हैं वह क्या लालसा करता है, कैसा प्रकट होना चाहता है, दूसरों को कैसा प्रकट होता है और स्वयं को कैसा प्रकट होता है।

व्यक्तित्व के विषय में सोचें, बात करें यदि हम चरित्र (Charecter) तथा स्वभाव (Temperament) को छोड़ दें तो बेईमानी होगी। G.W. Allport तो एक वाक्य में ही अपना निष्कर्ष निकालते हैं –

" Character is personality evaluated, and personality is character devaluated"

अतः व्यक्तित्व एक व्यापक प्रत्यय है और चरित्र उसका विशिष्ट पहलू है। व्यक्तित्व मनुष्य के आंतरिक जीवन की अभिव्यक्ति हैं तो चरित्र उपलब्धि की अभिव्यक्ति है। एक ..... का निम्न चरित्र होते हुए भी उसका व्यक्तित्व अति आकर्षित हो सकता है। अनेक उच्च चरित्रीय मनुष्यों का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से अवसाद पूर्ण (Neurotic) हो सकता है। स्वभाव (Temperament) मानव का आदतन संवेगात्मक भावुक दृष्टिकोण है। व्यक्तित्व में स्वभाव समाहित है परंतु इसका विलोम सत्य नहीं है। इस प्रकार स्वभाव व्यक्तित्व का संवेगात्मक पक्ष है तो चरित्र उसका नैतिक पक्ष। हम अपनी प्रवृत्ति, बुद्धि तथा स्वभाव के लिए अपने पूर्वजों को दोषी ठहरा सकते हैं परन्तु चरित्र के लिए नहीं। परंतु यह सत्य है कि दोनों व्यक्तित्व तथा चरित्र रिक्तता में विकसित नहीं होते। दोनों सामाजिक वातावरण से प्रभावित होते हैं। और सामाजिक रूप में ही उनका मूल्यांकन होता है।

मानलो कि हमें एक ज्यामिति (Geometry) का प्रश्न अथवा कोई अन्य समस्या हल करनी है जिसमें मानिसक प्रयास की आवश्यकता है। हम सोच–विचार कर, उदास और निराश होकर उसको हल न कर सकने में असमर्थता देखने लगे। उसे अधिक कठिन स्वीकार करें अथवा इसके विपरीत समस्या को सरल समझें। यह मानसिक अवस्थायें हमारे स्वाभाव पर आधारित हैं।

हम समस्या का अध्ययन करते हैं उसका विश्लेषण करते हैं, सम्बन्धों को ज्ञात करते हैं और तर्क के अनुसार उसे सरल कर लेते हैं तो 'बुद्धि' ने बाजी जीत ली।

यदि फिर करने की सोच कर समस्या को एक ओर रख दूं। मैं शुरू करू, पूरा करने से पहले ही छोड़ दू या उसी को सरल करने में लगा रहूँ, जब तक समस्या सरल न हो जाये यह हमारे चरित्र पर निर्भर करता है।

अतः बुद्धि योजना बनाती है, स्वभाव शक्ति प्रदान करता है परन्तु चरित्र निश्चय करता है कि योजना कैसे लागू की जाए।

अब हमारे सामने यह समस्या है कि शिक्षा से व्यक्तित्व का विकास कैसे होता है। यह ऊपर बताई हुई ज्यामिति की तरह हमारे सम्मुख एक समस्या के रूप खड़ी हो गई है। इसमें भी मानसिक प्रयास की आवश्यकता है। शिक्षा से मनुष्य के व्यवहार में वांछित परिवर्तन आता है और व्यक्तित्व मानवीय व्यवहार का वह निरालापन है जिससे वह अपनी विशिष्टता को प्राप्त होता है। दोनों का संबंध मानवीय व्यवहार से है। निःसंदेह शिक्षा मानव के व्यवहार में परिवर्तन कर उसके व्यक्तित्व का विकास करता है। मनोविज्ञान के मनोविश्लेषणक स्कूल के जनक फ्रायड का कहना है कि मानव का व्यक्तित्व तो कुछ बनना है वह प्रथम पाँच वर्ष में बन जाता है। इसका अर्थ हुआ कि मनुष्य का व्यक्तित्व उसकी प्रथम पाठशाला – परिवार तथा उसकी प्रथम शिक्षिका – स्नेहमयी माँ की धरोहर है। वह बच्चा स्कूल में प्रवेश कर लेता है तो उसके व्यक्तित्व का शनैः शनैः विकास होने लगता है। यहाँ एक प्रश्न छूट रहा है कि हम बालक में किस प्रकार के व्यक्तित्व का विकास चाहते हैं – Neurotic या Balanced .

बच्चे के कक्षा में बैठने मात्र तथा शिक्षक के कक्षा में खड़े होने मात्र से बच्चे के व्यक्तित्व का संतुलित विकास नहीं होगा। शिक्षा द्वि–मुखी प्रक्रिया है – दोनों को ही प्रयत्न होना है। शिक्षक अपने प्रभावशाली शिक्षण से और शिक्षार्थी अपने प्रभावशाली अधिगम से, इस प्रक्रिया में दोनों को सक्रिया रूप से क्रियाशील होना है। इसमें प्रश्न का आदान–प्रदान हैं परन्तु मैं इसमें एक कदम आगे बढ़कर कहना चाहूँगा कि जो शिक्षक अपने विद्यार्थियों को अधिकतम प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करता है।

वह श्रेष्ठ शिक्षक है। एक विशिष्ट परिस्थिति उस समय उपस्थिति होती है जब शिक्षक का I.Q. 110 हो और कक्षा के एक–दो विद्यार्थियों का I.Q. 130 से अधिक हो और विद्यार्थी द्वारा पूछे प्रश्न का उत्त शिक्षक नहीं जानता हो। ऐसे में उसे नाराज नहीं होना चाहिये। अपितु उसकी प्रशंसा करनी चाहिए और कहना चाहिये कि इसका उत्तर कल दूंगा।

विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास के अवरोधकों का ज्ञान करने के लिए निष्पादित परीक्षणों की कही नहीं निदान्त्मक (Diagnostic) परीक्षणों की भी आवश्यकता है। छात्रों को अपनी त्रुटियों तथा न्यूनताओं का ज्ञान हो तद्नुरूप सुधारात्मक (Remedial) शिक्षण का प्रयोग हो। कमजोर पद्धति भारतीय शिक्षा का अभिशाप है। (1948.49) के राधाकृष्णनन आयोग ने इस कमजोरी को पहिचाना। यह एक आवश्यक बुराई है। यह सोने का लड्डू है जो न तो खा मिलता है और उगल मिलता है। यदि परीक्षा पद्धिति में सुधार न हुआ तो इस शिक्षा से balanced personality के विकास की आशा त्याग देनी चाहिये। यह रोग प्राथमिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालयी परीक्षाओं तक में व्याप्त है। इसके सुधार हेतु मेरा सुझाव है – इससे परीक्षा के लगभग समस्त दोष (Paper out तथा Copying को छोड़कर) तिरोहित हो जायेंगे और फिर शिक्षा से संतुलित व्यक्तित्व विकास की आशा की जा सकती है। प्रश्नपत्र निर्माता, तीन घंटे में बिना अपने नोट्स तथा पुस्तकों की सहायता अपने ही प्रश्न पत्र को हल करें, इन्हें आदर्श उत्तर माना जाए, जिसमें शत्–प्रतिशत अंक दिए जायें। कुछ विषयों में इसमें कुछ संशोधन किया जा सकता है। उत्तर पुस्तिकें इनके अनुसार ही जांची जायें तथा विद्यार्थियों को Result के साथ उनकी उत्तर पुस्तिकाओं क साथ यह आदर्श उत्तरों को भी वापिस करना चाहिये। विद्यार्थियों को अपनी त्रुटियों का पता चले। जैसा कि पूर्व में छोटी कक्षाओं की त्रैमासिक तथा षट्मासिक परीक्षाओं में होता था। उसमें आदर्श उत्तर तो नहीं मिलते थे। अभी भी कहीं–कहीं ऐसा होता है।

विद्यार्थियों के सन्तुलित व्यक्तित्व विकास हेतु वह अपने उद्देश्य (Motives) इच्छायें (Desires) अपनी अच्छाईयों तथा बुराईयों को पहिचाने। वह अपने मूल्य तथा महत्व को समझें तथा आत्म–सम्मान की रक्षा करें। समूह में अपने को सुरक्षित समझें। उसे अन्य व्यक्ति चाहें, प्यार करे, अपनी योग्यता में विश्वास हो, किसी भी व्यक्ति के साथ समायोजित करने में समर्थ हो, उसके जीवन का दर्शन निश्चित हो, उसमें पलायनवादी प्रवृत्ति न हो, वास्तविकता में रहे, ऊँचे – ऊँचे स्वपन न देखें। उसमें अनेक तथा विभिन्न प्रकार की रूचियाँ हों, अपने निर्णय स्वयं करें, जीवन में जोश, उत्साह तथा आत्म–विश्वास हो।

इन विशेषताओं से पूर्ण व्यक्तित्व के विकास हेतु योग्य शिक्षकों की आवश्यकता है। राष्ट्र का विकास अच्छी शिक्षा पर, अच्छी शिक्षा, शिक्षक पर अच्छे शिक्षक अच्छे प्रशिक्षण महाविद्यालयों पर तथा अच्छे प्रशिक्षण महाविद्यालय अच्छे Techers educaters पर निर्भर करते हैं।

सन्दर्भ :–

1. व्यक्तित्व का मनोविज्ञान–अरूण कुमार सिंह व आशीष कुमार सिंह। 2. शिक्षा क्या है–जे0कृष्ण मूर्ति।
3. शिक्षा और समाज–आचार्य रामविलास।
4. व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास–स्वामी विवेकानन्द।
5. संगीत पत्रिकाऐं।